शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

खड़ी बोली काव्यभाषा की निर्मिति और डॉ० राम कुमार वर्मा

डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

www.shodh.net

सामाान्यतया लोक समूह के बीच प्रयुक्त लोकभाषाओं का एक निर्धारित स्वरूप है किन्तु इसके लिए हिन्दी खड़ी बोली स्वंय में एक अपवाद है। एक ओर वह जो पश्चिमी उत्तर प्रदेश में लोक समूह द्वारा बोली जाती है और दूसरी ओर वह खड़ी बोली जो भारत की राजभाषा, सम्पर्क भाषा, संचार भाषा, वैचारिक आदान-प्रदान एवं साहित्य सृजन की राष्ट्रव्यापी तथा अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है- दोनों दो भिन्न छोरों पर हैं। लोक समूह एवं शिष्ट प्रयोग वाली हिन्दी एक दूसरे से दिनों-दिन दूर होती जा रही है। इस साहित्यिक खड़ी बोली की कथा ठीक संस्कृत भाषा की भाँति है। ब्राह्मण युग से वैयाकरणों तथा काव्यचिन्तकों ने परम्परित संस्कृत को संस्कारित करके उसे आमजन के प्रयोग से भिन्न किया। यह संस्कृत, इस युग में अपने मूल स्वरूप से भिन्न होकर एक प्रकार से कृत्रिम एवं गढ़ी हुई भाषा बनकर साहित्य के अन्तर्गत व्यावहारिक भाषा बनी थी, ठीक ऐसी ही स्थिति आज साहित्यिक हिन्दी खड़ी बोली की है। इस खड़ी बोली की भाषिक बनावट फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना से शुरू हुई और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र युग में यह नई चाल में ढली। विशेषकर कविता के क्षेत्र में यह भारतेन्दु युग की ग्राह्य भाषा नहीं बन पाई थी किन्तु इस युग के कविगण इसे काव्य के संदर्भ में ब्रजभाषा जैसी लचीली भाषिक अन्विति देने की ओर सचेष्ट थे। एक पूर्ण परिभाषित व्यंजना की सहज प्रतीति दिलाने वाली संवेदनापूर्ण भाषा बनाने की होड़ हमें छायावाद युग के प्रारम्भ तक दिखाई पड़ती है। यही नहीं, छायावाद युग के पूर्व उर्दू तथा अंग्रेजी भाषाओं के भी दो मानक कई कवियों द्वारा सामने लाये गए किन्तु लयात्मक भाव संवेदना की वाहिका के रूप में यह खड़ी बोली सन् 1920 के आसपास छायावाद के विकास के साथ-साथ विकसित होती हुई आई और सन् 1940 तक इसका भाषिक संवेदना संदर्भ पूर्णत: मुखरित हुआ।

छायावाद के मध्यकाल की काव्यात्मक हिन्दी अपनी संवदेनात्मक अभिव्यक्ति के संदर्भ में अधिक रुचि लेती दिखाई पड़ती है। अंग्रेजी में कविता की भाषा को ''इमोटिव यूज आफ लैंग्वेज[1]'' कहा गया है और छायावादी काव्यभाषा जैसे इस परिभाषा की पर्याय बन चुकी है। 'मैं'पन के अभाव की पीड़ा इसके सृजन का तनाव है। उद्दाम यौवन की मादकता कुंठित भावनामय प्रेम तथा रहस्यमयता के आवरण में वस्तु संवेदना को साधे हुई यह छायावादी कविता तरलित होकर स्वयं बहती है।

छायावादी कविता ने सामाजिक मूल्य दिए हों या न दिए हों किन्तु खड़ी बोली हिन्दी काव्य के लिए उसका सबसे बड़ा योगदान है कि उसने एक इतिवृत्तात्मक भाषा के रूप को संवेदनात्मक भाषा के रूप में ढाला। इस प्रक्रिया के लिए महादेवी वर्मा ने सर्वाधिक कोमल, सर्वाधिक सुकुमार तथा सर्वाधिक सुन्दर को व्यक्त करने के लिए लघुतम भावना-प्रधान (भाववाची संज्ञापदों) शब्दों का प्रयोग किया है। पण्डित सुमित्रानन्दन पंत ने 'विशेषणों' से अपनी काव्यभाषा का निर्माण किया है। निराला बंगभाषा के पैटर्न पर 'रागमयता तथा लयात्मकता' को संगीत से सीधे जोड़ते हैं। 'संगीत के रागों की भाषा' का प्रयोग निराला की काव्यभाषा की अपनी प्रकृति है। जयशंकर प्रसाद ने प्रणय, विरह एवं वेदना से जुड़े भारतीय रोमैंटिक शब्दावली से अपनी काव्यभाषा सजाई है[2]- और डॉ0 राम कुमार वर्मा- जो इस विषय के विवेच्य हैं - उनकी संवेदनात्मक काव्यभाषा- विशेषकर जो उनके गीतिकाव्य में प्रयुक्त है, किन तत्त्वों और किन काव्यान्वितियों से निर्मित होती है, यह एक विचारणीय समस्या है।

डॉ0 राम कुमार वर्मा के गीति काव्य की सर्जनात्मक भाषा का विश्लेषण करने के पूर्व इस संदर्भ में दो-चार पंक्तियों में उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण कर लेना आवश्यक होगा -

डॉ0 राम कुमार वर्मा के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह अपने व्यवहार एवं सिद्धान्त के प्रत्येक क्षण के साहित्यकार हैं। भाषिक सृजनभंगिमा एवं उससे उत्पन्न होने वाली उन्मेषवृत्ति को व्यवहार की भाषा में भी वे इस प्रकार प्रकट करते रहते थे जैसे, वे सृजन और केवल सृजन के लिए तैयार बैठे हों। उनका अध्यापक व्यक्तित्व भी उनके इस साहित्यकार व्यक्तित्व में घुला मिला दिखाई देता है। उनका अध्यापन छात्र समुदाय को समझता कम था, भावात्मक आवेग में ज्यादा बाँधे रहता था। ललितभाषा का लाक्षणिक विधान

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

खड़ी बोली काव्यभाषा की निर्मिति और डॉ० राम कुमार वर्मा

डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

www.shodh.net

प्रतिक्षण श्रोताओं को तनाव में उद्दीप्त करता था, और उनके सम्पर्क में आने वाला - पाठक, छात्र, श्रोता सभी उनके इस साहित्यकार के व्यक्तित्व से निरन्तर बँधे दिखाई पड़ते थे - उनका कवि व्यक्तित्व, सर्जक व्यक्तित्व, साहित्यकार का व्यक्तित्व सभी को इस तरह बाँधता था कि श्रोता उनसे तन्मयीभूत होने के लिए विवश था - वह लोक व्यवस्था से सम्बद्ध होकर भी साहित्य व्यवस्था के संलाप से जुड़ जाता था। डॉ0 राम कुमार वर्मा के व्यक्तित्व की यह विशेषता न पंत में मिलती है और न महादेवी वर्मा में। निराला का काव्य जगत तो आत्मालाप की रचनाभूमि थी, और सबसे भिन्न।

इस विशेषता से मंडित डॉ0 राम कुमार वर्मा के सृजन की काव्यभाषा निर्मिति का स्वरूप क्या था - उनकी टिप्पणियों द्वारा इसे स्पष्ट करने में हमें अधिक सुविधा होगी। उन्होंने अपनी काव्यभाषा के बारे में अपनी कविताओं में भी जगह-जगह पर टिप्पणियाँ दी हैं - जिनमें से एकाध इस प्रकार हैं -

क्या अपनों का ही यही स्वार्थ साधन सुख की परिभाषा है।
जिसमें न हृदय का स्पन्दन है वह भाषा भी क्या भाषा है।

x x x x x x

हों तुम्हारे ये लजीले प्रश्न तो उत्तर बनू मैं ?
क्यों हृदय की भावना को मिल सकी अब तक न भाषा
(स्वर साधना)

इस संदर्भ में जिस भाषा की बात कही गई है, वह मानव जाति की चित्तवृत्ति के भावनात्मक स्पन्दन से जुड़ती है। वह भाषा- जो आवेग के क्षणों में उत्पन्न होकर श्रोता के सोए भावात्मक संस्कारों को उद्वेलित करे या वह भाषा जो व्यक्ति के भावात्मक प्रतीकों का मूर्तरूप बनकर चित्र में विम्बाकृति बनकर खड़ी हो जाए। डॉ0 राम कुमार वर्मा अपनी भाषा से, अपने शब्दों से, भाषिक आरोह-आवरोह एवं लयता से, अन्वितियों से जुड़ी आकांक्षाओं से, अपनी अतृप्तियों एवं उन्मादभरी काम दीप्तियों से एक ऐसी काव्यभाषा को गढ़ने की बात करते हैं - जो श्रोता या पाठक के चित्त में जीती-जागती रोमानियत बिम्बों से भरे स्वप्न लोक को प्रातीतिक सत्य बना दे। डॉ0 वर्मा कला विलास की भाषा से स्वप्निल चित्र नहीं, जीते-जागते चित्रों को चित्र में रखना चाहते हैं। छायावादी कविता की खड़ी बोली भाषा उनकी इन अवधारणाओं से कैसे सजती है - उसके कुछ सूत्र इस प्रकार हैं -

1. वे स्वयं कहते हैं कि ''उनकी रूपराशि कल्पना से निर्मित है।''
2. उनकी भावुकता का सबसे बड़ा तत्त्व है, रोमानियत - प्रणयभाव, उल्लास, मादकता, अतृप्ति, साहचर्य की कामना का अतिरेक
3. उनकी कविता कल्पनालोक तथा प्रणय के मधुर लोक के संयोग से बनती है किन्तु डॉ0 वर्मा उसमें यथार्थ जैसा जीवन भोगने की कामना रखते हैं।
4. कोमलतम, रमणीयतम, सुन्दरतम की परम्परा, अनुभव एवं भाषा एक बिन्दु पर एक साथ हैं।
5. वस्तुसत्ता को आत्मसत्ता में विलीनीकरण की प्रवृत्ति।

प्राय: डॉ0 वर्मा की ये अवधारणाएँ उनकी अभिव्यक्ति के लिए भाषा का सृजन करती हैं। उनके गीतों की सृजित भाषा का स्वरूप इसी प्रकार निर्मित है।[3]

काव्यभाषा निर्माण के संदर्भ में डॉ0 राम कुमार वर्मा का सबसे बड़ा हथियार-विपरीतार्थकता है। यह विषय, विरोध, विसंगति से प्रारम्भ होकर अन्तर्विरोध को फैलाती चलती है और अन्त में लाक्षणिक पैनेपन एवं कल्पना की अतिशयता से स्वयं को सजा लेती है।

कष्ट की गहराई के ऊपर खिला कमल, पूरी बात का अधूरा रह जाना, विद्युत की हँसी में रात का सिहरना, तारों की अधखिली कलियाँ-अँधेरी रात में भाग्य की विडम्बनाएँ, रसमय हृदय की चपल ज्वाला, आकाश का अश्रु - तुम्हारा हास है, काले नश्वर बादल जीवन के श्रृंगार हैं, 'ना' को इनकार न मानना' पाप से कलुषित प्रिय का पुण्य गात, आदि-आदि कितने उदाहरणों से उनके गीत भरे पड़े हैं।

भाषा के प्रयोग के द्वारा आकस्मिक परिवर्तन करके चमत्कृति द्वारा पाठक के मन में भावद्वन्द्व उत्पन्न करना

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

खड़ी बोली काव्यभाषा की निर्मिति और डॉ० राम कुमार वर्मा

डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

www.shodh.net

इस प्रयोग का प्रतिफल है। गीतों में यह विपरीतार्थता उन्माद, भावुकता, प्रणय, कोमलता, अतृप्ति, भोग की कामना आदि से जुड़ी शब्दावलियों तथा आकांक्षाओं से सम्बद्ध है। उन्मेष, कल्पना, सृजन की व्याप्ति आदि से समन्वित यह ब्रजभाषा से अधिक समृद्ध-रोमानियत तथा स्वच्छन्द प्रेम से मंडित है।

डॉ0 राम कुमार वर्मा जब सृजन के क्षणों में अधिक भावुक होते हैं तो क्रियापदों की आवृत्ति बहुलता एवं उनसे निर्मित सूक्ष्म रोमानियत भरे विम्ब अधिक सचेत दिखाई पड़ने लगते हैं। क्रियापदों की निरन्तरता और आवृत्तियों से निर्मित उनके चित्र अधिक संवेदनशीलता का परिवेश निर्मित करते हैं- जैसे -

आज मेरी गति तुम्हारी आरती बन जाए।
आरती घूमे कि खिंचता जाए रंजित क्षितिज घेरा।
धूम सा जलकर भटकता चले सारा नभ अँधेरा।।

गतिशीलता, आरती बनना, घूमना, खिंचना, जलना, भटक कर चलना ये क्रियापद तथा कृदन्तीय रूप एक विशाल बिम्ब द्वारा प्रेम की चित्रात्मक आवृति निर्मित करते हैं। - छायावादी युग में रचा गया भाषा का यह कथात्मक प्रयोग उसकी सम्पन्नता का स्वयं में एक जीवन्त साक्ष्य है।

काव्यभाषा की दृष्टि से कभी-कभी लगता है, उनका अध्यापक-साहित्यकार उनके सर्जन पर पूरी तरह से हावी है। इस संदर्भ में जब वे काव्यभाषा को रचना के स्तर पर उतारते हैं, तो लाक्षणिक जटिलता, उनके साथ-साथ चलने लगती है। डॉ0 वर्मा में यह लाक्षणिक जटिलता उनकी कल्पना से जुड़कर वक्रतापूर्ण अर्थ विधान का कार्य करने लगती है। यह सत्य है कि डॉ0 राम कुमार वर्मा की काव्यभाषा में लाक्षणिकता की भंगिमा उसका प्रमुख तत्त्व है, किन्तु यह लाक्षणिकता धीरे-धीरे शास्त्रवाद का रूप ग्रहण करने लगती है और तब डॉ0 वर्मा संस्कृत काव्य परम्परा में महाकवि भारवि, श्री हर्ष, माघ जैसे प्रयोगों के प्रति उद्यत दिखाई पड़ने लगते हैं। वर्मा जी के प्रबन्धकाव्यों में भाषा की यह प्रवृत्ति निरन्तर दिखाई देती है जैसे -

ज्यों श्लेष अलंकार में प्रयुक्त एक शब्द।
एक बार में अनेक अर्थ कह देता है।।
है ब्राह्म बेला तंद्रा कुछ ऐसी होती है,
जैसे कर्मनाशा मिल जाय हनुजाया में।
वज्र तर्जनी से हा! कितना विवश हूँ,
हो गया हूँ पुष्प मुरझाया-सा कूष्मांड का।
(तुलसी में जो 'तर्जनि देखत कुम्हिलाहीं' का यह रूपान्तरण है)

हिन्दी काव्यभाषा के निर्माण की यह विशेषता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी युग की प्रवृत्ति के विकास का दूसरा सोपान् कहा जा सकता है।

डॉ0 राम कुमार वर्मा की काव्यभाषा को आलोचकों ने विचलन (Deviation) का एक बड़ा साक्ष्य माना है। यह प्रवृत्ति हमें निराला में अधिक मिलती है। भाषा के माध्यम से वस्तु सत्ता को इस चतुरता से रखना कि अर्थव्यंजना स्वयं सामान्यता से लाक्षणिकता का रूप ग्रहण कर ले। छायावादी शैली के अन्तर्गत लोकानुभूति को आध्यामिकता से जोड़ने की एक विशेष प्रवृत्ति मिलती है। सामान्य प्रेम, विरह, मादकता, सौन्दर्य की अभिभूतता, वासनाओं आदि को कवि इन भंगिमाओं के साथ रखना चाहता है कि वे सब लोकानुभूति से जुड़ती हुई आध्यात्मिक रहस्यमयता को व्यंजित कर सकें। डॉ0 राम कुमार वर्मा की कविता का यह स्वरूप उनके भाषिक संगठन में अर्थद्वन्द्व का द्वैतमूलक विधान प्रस्तुत कर पूरे प्रसंग में रोमाँचकता की सृष्टि करता चलता है। उनकी कविता का रहस्यवादी दायरा भाषा के इस विचलन संपर्क के तनाव से बराबर घिरा दिखाई पड़ता है - फलस्वरूप ज्ञेयता से अज्ञेयता की यह अर्थ विकास दृष्टि यथार्थ को तोड़कर रहस्यमयता की ओर हमारे मन को मोड़ देती है। जीवन के यथार्थ का घेरा इस प्रकार यहाँ पहुँच कर रहस्यमयता से टूट जाता है - जैसे-

बहुत - सी बातें हुई अब
रात ढलती जा रही है।
कौन - सा संकेत हैं जो,

SHODH SANCHAYAN

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

खड़ी बोली काव्यभाषा की निर्मिति और डॉ० राम कुमार वर्मा

डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

www.shodh.net

साँस चलती जा रही है।
अवधि जितनी कम बची
उतनी मचलती जा रही है।
दीप्ति बुझने को नहीं,
वह और जलती जा रही है।

काव्यभाषा के इस विचलन सिद्धान्त के आधार पर हम बहना चाहें तो कह सकते हैं कि लोक प्रणय में प्रणयी की विश्रान्ति मुद्रा को कवि अर्थान्तरण द्वारा प्रणय-सहचरी के प्रणय पाश में बाँधकर रहस्यवाद में ढाल देता है - 'मृत्यु' आत्मा को परमात्मा से जोड़ देने की आधारशिला है- और सम्पूर्ण प्रणय भाव यहाँ उसी की लाक्षणिकता हैं। निराला एवं महादेवी के समानान्तर डॉ0 वर्मा अर्थान्तरण की इस भाषिका रचना प्रक्रिया का अपनी कविता में निरन्तर उपयोग करते हैं। डॉ0 राम कुमार के गीत जहाँ अन्तर्विरोधों से भरे लाक्षणिक चमत्कार की सृष्टि करते हैं, वहीं वे अर्थान्तरण द्वारा अर्थ विचलन की अनेकानेक भंगिमाओं को भी सक्रिय बनाते हैं।

डॉ0 राम कुमार वर्मा की काव्यभाषा की मिथकीय व्यवस्था बड़ी-ही सम्पन्न है। वे मिथकों को तोड़ते नहीं, अपनी अर्थ संगति के लिए निरन्तर उनका उपयोग करते चलते हैं। स्वयं में छायावादी कविता की भी यह प्रकृति रही है कि वह परम्परा को लेकर चलती है, उसे तोड़ने में, विश्वास नहीं रखती- लोक जीवन का समस्त रोमांटिक संदर्भ छायावादी कविता में प्रणय के मिथक साक्ष्य-सा बन जाता है। डॉ0 वर्मा अपनी कविता में परम्परा के मिथकों को सँवारकर उसे सर्वथा एक नई भंगिमा देकर हमारे सामने रखते हैं। जैसे -

घनघोर धाराओं में घहराया अशनिपात।
बलि यज्ञ हेतु घुस आए हों आकुलि किरात।

'आकुलि किरात' का बलियज्ञ में घुस जाना' भयंकरता और अपवित्रता का प्रतीक है। उनके 'उत्तर रामचरित' प्रबन्ध काव्य में मिथकीय प्रयोगों की झड़ी से दिखाई देती है। 'ओ अहल्या' ! का एक उदाहरण देखें -

यह तुला की है न कन्या मिथुन की ही बात।
कुम्भ में तब मीन है तेरे झिलमिलाकर गात।

श्लेष के द्वारा ज्योतिष का अर्थसंदर्भ- युवती की कुम्भ राशि में मीन यदि प्रबल है, तो वह अति सुन्दरी होगी और चारों ओर उसकी सौन्दर्य चर्चा होगी।

इसी प्रकार - पाणिनि के सूत्र को दृष्टान्त के रूप में कवि कैसे समेटता है -

तभी श्वान युवा जैसा दुष्ट दण्ड पाएगा
लांक्षित सदैव होगा मेरे इस श्राप से।

पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में श्वान (कुत्ता), युवान् (कामातुर नवयुवक) एवं 'मघवान्' के लिए एक 'बुन्' प्रत्यय बताया है - यह प्रत्यय ही नहीं, एक मिथकीय प्रयोग भी है, तुलसी भी इसी क्रम में 'सरिस स्वान मघवान् युवानू' पद का प्रयोग करते हैं- कवि उस व्याकरण से जुड़े मिथकीय संदर्भ को दुहराने से नहीं चूकता।

डॉ0 राम कुमार वर्मा अपनी कविता में परम्परा का कहीं भी तिरस्कार नहीं करते और उनके प्रबन्धकाव्य इस परम्परा- विधान के मुख्य आधार हैं। भारतीयता की निष्ठा से जुड़ी भाषा एवं उसके रचनात्मक संदर्भों को वे बार-बार दुहराते हुये अपनी भाषा को उस परम्परा से जोड़े हुए दिखाई पड़ते हैं। किन्तु भाषिक संवेदना में क्षरण नहीं दिखाई पड़ता।

अन्त में, उन्हीं के शब्दों द्वारा यह निष्कर्ष निकला जा सकता है कि -

इस दिशा से उस दिशा तक
इन्द्रधनुषी प्रिय संदेसे
वायु लहरों बीच मैंने कुछ कहे या कुछ कहे से।
साँस से ही जान लेना जो कि मैंने बात की।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

खड़ी बोली काव्यभाषा की निर्मिति और डॉ० राम कुमार वर्मा

डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

www.shodh.net

निष्कर्षत : भंगिमाएँ ही उनकी काव्यभाषा के लिए आवरण हैं। सीमित शब्दों की यह सांकेतिक अर्थ भंगिमा उनकी कविता की निर्मिति के लिए सर्वत्र आधार का कार्य करती है।

संदर्भ -

1. प्रिंसिपिल्स आफ लिट्रेरी क्रिटिसिज्म - पृ0 98 तथा 114
2. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास - डॉ0 राम स्वरूप चर्तुवेदी -पृ0 110, 111
3. नई कविता : खण्ड एक : सैद्वान्तिक - पृ0 164
4. नई कविता के आलोचकों से- डॉ0 राम कुमार वर्मा-पृ0 335
   नई कविता, खण्ड एक, सैद्धान्तिक पक्ष
5. नई कविता : खण्ड एक, सैद्धान्तिक पक्ष- पृ0 171

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN